अष्टम माला, खंड 25, अंक 13

बुधवार, 11 मार्च, 1987

20 फाल्गुन 1908 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद

का

हिन्दी संस्करण

आठवां-सत्र

(आठवीं लोक सभा)

B8
27/3/90

(खंड 25 में अंक 11 से 20 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

[अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जाएगी। इनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा]

विषय सूची

अष्टम माला, खंड 25,		आठवां सत्र, 1987/1908 (शक)
अंक 13	बुधवार, 11 मार्च, 1987	20 फाल्गुन, 1908 (शक)

विषय	पृष्ठ
निधन सम्बन्धी उल्लेख	1

लोक सभा

बुधवार, 11 मार्च, 1987/20 फाल्गुन, 1908 (शक)

लोक सभा 11 बजे समवेत हुई।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

[अनुवाद]

निधन सम्बन्धी उल्लेख

अध्यक्ष महोदय : मुझे बड़े खेद के साथ सभा को सूचित करना है कि हमारे सहयोगी श्री मूलचन्द डागा का कल शाम देहान्त हो गया है। श्री डागा राजस्थान के पाली निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे।

श्री डागा पेशे से वकील थे और एक निष्ठावान जन प्रतिनिधि थे। 1959, 1961-66 और 1970-72 के दौरान वह पाली (मारवाड़) म्यूनिसिपल बोर्ड के अध्यक्ष रहे। वह राष्ट्रीय पशु कल्याण बोर्ड के भी अध्यक्ष थे।

श्रमिक संघ नेता के रूप में वह 1954 से भारतीय राष्ट्रीय मजदूर संघ कांग्रेस की पाली शाखा के अध्यक्ष थे। 1957-62, 1967-71 और 1977-80 के दौरान वह राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे। 1971-77 के दौरान वह पांचवीं लोक सभा के और 1980-84 के दौरान सातवीं लोक सभा के सदस्य रहे।

श्री डागा एक वयोवृद्ध संसदविद् थे और इस नाते सभा की कार्यवाही में काफी रुचि लेते थे। वह सदस्यों के अधिकारों के प्रति सचेत रहते थे और जो भी विधेयक सभा में चर्चा के लिए पेश किया जाता था, उसमें जो भी कमी होती उसे सामने लाते। उनकी आलोचना रचनात्मक होती थी। वह अपने विचार प्रकट करते समय न तो डरते थे और न किसी का पक्षपात करते थे। उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं रहती थी कि इससे किसको दुःख हो रहा है। सभा और समितियों में उनकी उपस्थिति का सम्मान किया जाता था। उनकी अनुपस्थिति बहुत खलेगी।

श्री डागा कई संसदीय समितियों के सदस्य रहे। वह जिस पद पर भी रहे, उस पर काफी मेहनत की और उस पद को गरिमा प्रदान की। अधीनस्थ विधान संबंधी समिति के सभापति के नाते उन्होंने विभिन्न अधिनियमों का उचित कार्यान्वयन सुनिश्चित कराने के लिए अपना सक्रिय योगदान दिया।

उन्होंने कई देशों की यात्रा की। उन्होंने 1980 में केनबरा में और 1983 में ओटावा में हुई प्रत्यायोजित विधान सम्बन्धी समितियों के राष्ट्रमंडलीय सम्मेलन में भी भाग लिया।

श्री डागा के निधन से हमने एक बहुत ही प्रभावी संसदविद् और पददलित लोगों के हिमायती को खो दिया है ।

अपने कार्यालय में कार्य करते हुए उनकी मृत्यु हो गई । डाक्टरों के सारे प्रयास विफल हो गये और 69 वर्ष की आयु में दिल्ली में उनका निधन हो गया । सही मायने में उनकी मृत्यु काम करते हुए हुई ।

हम अपने इस मित्र की मृत्यु पर शोक व्यक्त करते हैं ।

अब सदस्य दिवगत आत्मा के सम्मान में थोड़ी देर मौन खड़े होंगे ।

तत्पश्चात् सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े रहे ।

अध्यक्ष महोदय : अब सभा कल 11 बजे म०पू० तक के लिए स्थगित होती है ।

11.04 म० पू०

तत्पश्चात् लोक सभा गुरुवार, 12 मार्च, 1987/21 फाल्गुन, 1908 (शक) के ग्यारह बजे म० पू० तक के लिए स्थगित हुई ।

मुद्रक : ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-2